संगठन का सहारा लेता है। कर्मचारियों का चुनाव, कौन सा कर्मचारी शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से किस कार्य के लिए उपयुक्त है यह कार्य संगठन का है। इस प्रकार प्रबन्ध द्वारा संगठन का कार्य सम्पन्न होता है।

③ Co-ordinating (समन्वय करना) → कार्यों और प्रयासों में सन्तुलन (Balancing) तथा समय की एकरूपता को स्थापित करने को समन्वय कहते हैं। आजकल व्यापार इतना बड़ा हो गया है कि पग-पग पर समन्वय स्थापित करना आवश्यक हो गया है।

④ कार्य में प्रवृत्त करना या प्रेरित करना (Actuating or Motivating) → प्रबन्ध श्रमिकों तथा कर्मचारियों में स्वेच्छा से कार्य करने की भावना को जागृत करता है ताकि वे स्वामिभक्त बनें ईमानदारी एवं लगन के साथ अपने कर्तव्यों का निष्पादन कर सके। प्रबन्ध यह कार्य अभिप्रेरण द्वारा बड़े ही मनोवैज्ञानिक ढंग से सम्पन्न करता है।

⑤ निर्देशन या संचालन (Direction) → यह कार्य भी प्रबन्ध द्वारा सम्पन्न किया जाता है। प्रबन्धक एक सेनापति अथवा नायक के समान होता है जो निर्देशन द्वारा अपने अधीन कर्मचारियों को यह बताता है कि उन्हें कब, कहाँ, क्या और कैसे करना है।

⑥ नियुक्तिकरण (Staffing) → प्रबन्ध का एक महत्वपूर्ण कार्य कर्मचारियों की नियुक्ति करना भी है। नियुक्तिकरण के अन्तर्गत कर्मचारियों का चुनाव, उनकी भर्ती तथा संगठन सम्बन्धी क्रियाएं आती हैं। वैसे नियुक्ति का कार्य ~~[illegible]~~ प्रशासनिक है फिर भी मानव श्रम के अभाव में योजना को कार्यरूप में परिणत करना असम्भव है।

⑦ नियंत्रण (Control) → प्रबन्धकों यह देखना होता

Scanned with CamScanner

"Management may be broadly defined as the art of applying the economic Principles that underline the control of men and materials in the enterprise under consideration."

② F. W. Taylor —

यह जानने की कला कि आप व्यक्तियों से वास्तव में क्या काम लेना चाहते हैं और यह देखना कि वे उसको सबसे सस्ते एवं सर्वश्रेष्ठ ढंग से सम्पन्न करते हैं, प्रबन्ध कहलाता है।

"Management is the art of Knowing exactly by what you want men to do and then seeing that they do it in the best and cheapest way".

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम प्रबन्ध की परिभाषा इस प्रकार दे सकते हैं —

" प्रबन्ध का तात्पर्य व्यवसायिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उसमें नियुक्त कर्मचारियों के कार्यों को इस प्रकार नियोजित, समन्वित, प्रेरित तथा नियंत्रित करना है कि वे उद्देश्य कम से कम लागत और अधिक कुशलता के साथ प्राप्त किया जा सके।

प्रबन्ध के कार्य (Functions of Management)

प्रबन्ध एक नवीन एवं विकासशील विज्ञान है। आर. लूथर गुलिक ने प्रबन्ध के सात कार्य बताए हैं जिनको PDCADSC नामक शब्द से सम्बोधित किया जाता है। जो इस प्रकार है :-

① योजना बनाना (Planning) — कोई भी कार्य करने के पूर्व कार्यों की योजना बनाना आवश्यक है। योजनाएँ अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन दोनों बनाई जाती है। इस प्रकार योजना के द्वारा नीतियाँ (Policies) निर्धारित कर लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

② संगठन बनाना (organisation) उत्पादन के विभिन्न साधनों के समन्वय स्थापित करने के लिए प्रबन्ध

Scanned with CamScanner

है कि समस्त कार्य निश्चित योजना के अनुसार एवं पूर्ण कार्य क्षमता के अनुसार हो रहा है अथवा नहीं। नियंत्रण का अर्थ उत्पादन की मात्रा में वृद्धि, किस्म में सुधार एवं व्यय में कमी लाने के लिए उस संस्था पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित करना है। नियंत्रण स्वच्छ एवं प्रभावी होनी चाहिए

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि किसी भी व्यवसाय के विकास के लिए यदि प्रबन्ध के द्वारा उपरोक्त ये सारे कार्य सही ढंग से करें तो निश्चित ही व्यवसाय में सफलता प्राप्त होगा। इसलिए कहा जाता है कि व्यवसायिक क्षेत्र में सुप्रबन्ध का न होना बालू में मकान बनाने के समान है।

अजीत कुमार सिंह
वाणिज्य विभाग
स्व॰ नारायण सिंह सिंह राम कुमार सिंह
महाविद्यालय, सहरसा।

Scanned with CamScanner